

योएल की पुस्तक और लाओदीकियाई सेवेंथ-डे एडवेंटिस्ट कलीसिया - संख्या चवालीस

Jeff Pippenger

2026-02-10

संख्या चवालीस

सन 1844 में, सातवें दिन के सब्त के सिद्धान्त की मुहर खोली गई, और जब बहन व्हाइट ने वाचा के सन्दूक के भीतर देखा, तब उस पर उनके समक्ष विशेष बल दिया गया। उन्होंने यह भी लिखा कि अन्त्यकाल में अवतार के सिद्धान्त में भी वही स्वर्ग-प्रदत्त विशेष बल निहित था। सातवें दिन का सब्त उस विशेष प्रकाश का प्रतिनिधित्व करता है जो प्रतिरूपात्मक प्रायश्चित्त-दिवस के आरम्भ होने पर वाचा के सन्दूक से प्रकट हुआ, और सातवें वर्ष का सब्त उस विशेष प्रकाश का प्रतिनिधित्व करता है जो प्रतिरूपात्मक प्रायश्चित्त-दिवस के अपनी समाप्ति पर पहुँचने पर वाचा के सन्दूक से प्रकट होता है।

अवतार का सिद्धान्त लैव्यव्यवस्था तेईस की अन्तिम पवित्र सभा में प्रतिरूपित है; यह सातवें दिन के विश्रामदिन का ओमेगा है, जो लैव्यव्यवस्था तेईस के आरम्भ में पहली पवित्र सभा है। वह प्रथम विश्रामदिन परमेश्वर की सृजनात्मक सामर्थ्य का प्रतिनिधित्व करता है, और अन्तिम विश्रामदिन उसकी पुनर्सृजनात्मक सामर्थ्य का। वह प्रथम विश्रामदिन संख्या "23" द्वारा निरूपित है, और अन्तिम संख्या "252" द्वारा।

वे दोनों प्रतीक लैव्यव्यवस्था 23 के आरंभ और अंत के सीमाचिह्न हैं, और वे मिलराइट इतिहास के भी आरंभ-अंत के सीमाचिह्न हैं। 1798 में इस्राएल के उत्तरी राज्य के विरुद्ध 2,520 वर्षों की पूर्ति हुई, और 2,300 वर्षों की पूर्ति 22 अक्टूबर, 1844 को हुई। जब बहन व्हाइट को पवित्रस्थान में ले जाया गया और उन्होंने दस आज्ञाओं का दर्शन किया, तब वे परमेश्वर की अंतिम दिनों की उस प्रजा का प्रतिरूप थीं, जो मसीह का अनुसरण करते हुए, जब वह अपने प्रायश्चित्त के कार्य को समाप्त कर रहा होता है, अति-पवित्र स्थान में प्रवेश करती है। मंदिर की परीक्षा यह है कि जहाँ कहीं वह जाता है, मेम्ने का अनुसरण किया जाए।

ये वे हैं जिन्होंने स्त्रियों के साथ अपने आप को अशुद्ध नहीं किया, क्योंकि वे कुँवारे हैं। ये वे हैं जो जहाँ कहीं मेम्ना जाता है, उसके पीछे-पीछे चलते हैं। ये मनुष्यों में से छुड़ाए गए हैं, और ये परमेश्वर और मेम्ने के लिये प्रथम फल हैं। प्रकाशितवाक्य 14:4.

भविष्यद्वक्ता के रूप में बहन वाइट प्रारम्भ में उन विश्वासयोग्यों का चित्रण कर रही थीं, जो विश्वास के द्वारा महापवित्र स्थान में प्रविष्ट हुए; और ऐसा करते हुए वे अंतकाल के उन विश्वासयोग्यों का भी आदर्श प्रस्तुत कर रही थीं, जो विश्वास से महापवित्र स्थान में प्रवेश करते हैं और फिर वाचा के सन्दूक में निहारते हैं। वहाँ उन्हें जो प्रकाशित होकर दिखाई देता है, वह देहधारण का सिद्धान्त तथा at-one-ment की परिपूर्ति है। वे दो आवरण करने वाले करूबों को देखते हैं, जो सृष्टि और पुनर्सृष्टि के दो विश्रामदिनों का प्रतिनिधित्व करते हैं। वे सन्दूक के एक पार्श्व पर 252 और दूसरे पर 23 देखते हैं, और यह पहचानते हैं कि, सृष्टि और पुनर्सृष्टि के अनुरूप, 23 दिव्यता और मानवता के विवाह का प्रतिनिधित्व करता है, और 252 मनुष्य के उस रूपान्तरण का प्रतीक है जिसमें वह दिव्यता के साथ संयुक्त मनुष्य बन जाता है।

प्रायश्चित्त-आवरण को हटाया नहीं जाना था; अतः बहन वाइट का भीतर देखना एक विशेष प्रगटीकरण था, और भविष्यसूचक अर्थ में यह चित्रण उन अंतिम दिनों के लिए उन दिनों की अपेक्षा अधिक है जिनमें वह रहीं। दर्शन द्वारा हम रूपांतरित होते हैं। मंदिर की परीक्षा यह है कि मसीह अपनी कुँवारी प्रजा को चरण-दर-चरण अपने मंदिर में ले चलता है। भविष्यसूचक सत्य उस पथ के चरणों का निरूपण करते हैं जो मध्यरात्रि की पुकार के संदेश से आलोकित है।

छियालिस वर्षों का मिलरवादी मंदिर एक चरण है।

"23," का मानव-मंदिर (पुरुष और स्त्री, उसने उन्हें सृजा) एक चरण है।

मसीह का अपने मन्दिर को तीन दिनों में उठाना एक चरण है।

भण्डारगृह मलाकी का मंदिर है।

नहेम्याह ने भण्डारगृह को तोबिय्याह के अपवित्रीकरण से शुद्ध किया।

वही मंदिर था जहाँ महायाजक हिल्किय्याह ने राजा योशिय्याह के पुनरुद्धार के काल में मूसा की लिखित रचनाएँ खोज निकालीं।

जिस मंदिर को नहेम्याह ने अपवित्रीकरण से शुद्ध किया था, वही मंदिर, सिस्टर वाइट के कथनानुसार, मसीह ने उसके 'धर्मनिन्दात्मक अपवित्रीकरण' से दो बार शुद्ध किया।

मिलर के स्वप्न की शवपेटिका एक पायदान थी।

ज्योंही मसीह अपने विश्वासयोग्यों को अति-पवित्र स्थान में ले आता है, वह—जिनका प्रतिनिधित्व बहन वाइट करती हैं—उन्हें वाचा के सन्दूक के पास ले जाता है, दया-आसन को उठाता है और उन्हें भीतर देखने देता है। जब वे भीतर देखते हैं, तो वे देखते हैं कि अवतार का सिद्धान्त और सातवें दिन का सब्त, दोनों, मृदु प्रभामण्डल से आच्छादित हैं। रेखा पर रेखा, जो लोग उन सिद्धान्तों को पहचानते हैं जो 'मृदु दीप्ति से आच्छादित' हैं, वे विश्वास द्वारा अति-पवित्र स्थान में प्रवेश कर सन्दूक के भीतर देखने वाली बहन वाइट के साथ अनुरूप हो जाते हैं।

प्राचीन भविष्यवक्ताओं ने जिन दिनों में वे स्वयं जीवित थे, उनकी तुलना में अन्तिम दिनों के विषय में अधिक विशिष्ट रूप से बोले। जब वही प्राचीन भविष्यवक्ता स्वयं साक्ष्य का भाग बन जाते हैं, तब वे अन्तिम दिनों में परमेश्वर की प्रजा का प्रतिनिधित्व करते हैं, और अन्तिम दिनों की परमेश्वर की प्रजा एक लाख चवालीस हज़ार हैं। सिस्टर व्हाइट सम्भवतः सबसे महत्वपूर्ण प्राचीन भविष्यवक्ता हैं, क्योंकि उनके सभी चित्रण एक लाख चवालीस हज़ार के ओमेगा-इतिहास का अल्फ़ा-इतिहास प्रतिनिधित्व करते हैं। समस्त भविष्यवक्ता अवशिष्ट का निरूपण करते हैं, परन्तु सिस्टर व्हाइट एक ऐसे आरम्भिक इतिहास का भी प्रतिनिधित्व करती हैं जो अन्त्य-इतिहास में अक्षरशः पूरित होता है।

अल्फ़ा के आधारभूत इतिहास में, दर्शन में बहन वाइट को स्वर्गीय पवित्रस्थान के अति-पवित्र स्थान में ले जाया जाता है। वहाँ पहुँचने पर, वाचा के सन्दूक पर स्थित कृपा-आसन—जिसे हटाया नहीं जाना था—को ऊपर उठाया गया, ताकि बहन वाइट भीतर देख सकें, जहाँ उन्हें दस आज्ञाएँ दिखाई दीं।

पवित्रतम स्थान में मैंने एक सन्दूक देखा; उसके ऊपर और किनारों पर शुद्धतम सोना था। सन्दूक के प्रत्येक छोर पर एक सुंदर करूब था, जिसके पंख उस पर फैले हुए थे। उनके मुख एक-दूसरे की ओर थे और वे नीचे की ओर देख रहे थे। स्वर्गदूतों के बीच एक सोने की धूपदानी थी। सन्दूक के ऊपर, जहाँ स्वर्गदूत खड़े थे, अत्यंत उज्ज्वल महिमा थी, जो ऐसे प्रतीत होती थी मानो वहाँ परमेश्वर का सिंहासन हो जहाँ वह निवास करता है। यीशु सन्दूक के पास खड़े थे, और जब पवित्र जनों की प्रार्थनाएँ उनके पास पहुँचतीं, तो धूपदानी की धूप धुआँ देने लगती, और वे उस धूप के धुएँ के साथ उनकी प्रार्थनाएँ अपने पिता के सम्मुख चढ़ाते। सन्दूक में मन्ना का सोने का पात्र, हारून की वह छड़ी जो कोंपलित हो गई थी, और पत्थर की पट्टिकाएँ थीं, जो पुस्तक की भाँति एक साथ तह हो जाती थीं। यीशु ने उन्हें खोला, और मैंने देखा कि उन पर परमेश्वर की उँगली से दस आज्ञाएँ लिखी हुई थीं। एक पट्टिका पर चार थीं, और दूसरी पर छह। पहली पट्टिका की चार, बाकी छह से अधिक चमक रही थीं। परन्तु चौथी—सब्त की आज्ञा—सबसे बढ़कर चमक रही थी; क्योंकि सब्त को परमेश्वर के पवित्र नाम के सम्मान में मानने के लिए अलग ठहराया गया था। पवित्र सब्त अत्यंत महिमामय दिख रहा था—उसके चारों ओर महिमा का आभामंडल था। मैंने देखा कि सब्त की आज्ञा क्रूस पर कीलों से नहीं ठोकी गई थी। यदि वह ठोकी गई होती, तो अन्य नौ आज्ञाएँ भी ठोकी गई होतीं; और तब हमें, चौथी को तोड़ने की भाँति, उन सबको तोड़ने की भी स्वतंत्रता होती।

मैंने देखा कि परमेश्वर ने सब्त को नहीं बदला, क्योंकि वह कभी नहीं बदलता। परन्तु पोप ने उसे सप्ताह के सातवें दिन से बदलकर पहले दिन कर दिया था; क्योंकि उसे समयों और व्यवस्थाओं को बदलना था। प्रारंभिक लेखन, 32.

सातवें दिन के सब्त का सिद्धांत, मिलराइट आंदोलन के आधारभूत इतिहास का अल्फ़ा सिद्धांत था; यह इतिहास फिलाडेल्फ़ियाई मिलराइट आंदोलन के रूप में आरम्भ हुआ, फिर 1856 में लाओदीकियाई मिलराइट आंदोलन में रूपांतरित हुआ, और तत्पश्चात् 1863 में लाओदीकियाई सातवें-दिन-एडवेंटिस्ट कलीसिया में रूपांतरित हो गया। बहन व्हाइट अन्त के दिनों के इतिहास में ओमेगा सिद्धांत की भी पहचान करती हैं, जब एक लाख चवालीस हज़ार का लाओदीकियाई आंदोलन एक लाख चवालीस हज़ार के फिलाडेल्फ़ियाई आंदोलन में रूपांतरित होता है। अल्फ़ा और ओमेगा की ज्योतियाँ सातवें दिन के सब्त के सिद्धांत और देहधारण के सिद्धांत द्वारा दर्शाई जाती हैं।

जो परमेश्वर के साथ संगति रखते हैं, वे धर्म के सूर्य के प्रकाश में चलते हैं। वे परमेश्वर के सामने अपनी चाल-चलन को भ्रष्ट करके अपने उद्धारकर्ता का अपमान नहीं करते। उन पर स्वर्गीय ज्योति चमकती है। जैसे-जैसे यह पृथ्वी का इतिहास अपने अंत के निकट आता है, मसीह के विषय में, और उससे संबंधित भविष्यवाणियों के विषय में, उनका ज्ञान बहुत बढ़ता जाता है। परमेश्वर की दृष्टि में वे अनन्त मूल्य के हैं; क्योंकि वे उसके पुत्र के साथ एकता में हैं। उनके लिए परमेश्वर का वचन अतुलनीय रूप से सुंदर और मनोहर है। वे उसकी महत्ता को देखते हैं। सत्य उनके लिए उद्घाटित होता है। देहधारण का सिद्धान्त कोमल आभा से आलोकित हो उठता है। वे देखते हैं कि पवित्र शास्त्र वह कुंजी है जो सब भेद खोलती है और सब कठिनाइयों का समाधान करती है। जिन्होंने प्रकाश को ग्रहण करने और प्रकाश में चलने से इंकार किया है, वे भक्ति का भेद समझने में असमर्थ होंगे; परन्तु जिन्होंने क्रूस उठाने और यीशु का अनुसरण करने में संकोच नहीं किया, वे परमेश्वर के प्रकाश में प्रकाश देखेंगे। द साउदर्न वॉचमैन, 4 अप्रैल, 1905.

“अवतार का सिद्धान्त” को “भक्ति का भेद” भी कहा जाता है।

और निस्संदेह भक्ति का भेद महान है: परमेश्वर देह में प्रकट हुआ, आत्मा में धर्मी ठहराया गया, स्वर्गदूतों को दिखाई दिया, अन्यजातियों में उसका प्रचार किया गया, जगत में उस पर विश्वास किया गया, महिमा में ऊपर उठा लिया गया। 1 तीमुथियुस 3:16.

“रहस्य” अंतिम पीढ़ी तक गुप्त रहता है, जब विश्वासीजन यह देखते हैं कि देहधारण का सिद्धान्त सातवें दिन के सब्त का ओमेगा है।

वह रहस्य भी, जो युगों और पीढ़ियों से छिपा रखा गया था, परन्तु अब उसके पवित्र जनों पर प्रकट किया गया है; जिन्हें परमेश्वर ने यह ज्ञात कराना चाहा कि अन्यजातियों में इस रहस्य की महिमा का धन क्या है— अर्थात् तुम्हारे भीतर मसीह, जो महिमा की आशा है। कुलुस्सियों 1:26, 27.

यह उचित है कि वही कुलुस्सियों 1:26 उस “भेद” की बात करता है जो “छिपाया गया था”, परन्तु वह भेद अन्तिम दिनों में “प्रकट किया जाता है”। जब किसी भविष्यवाणी की मुहर खोली जाती है, तब भविष्यवाणी का प्रकाश प्रकट होता है, जैसा कि दानिय्येल बारह में दर्शाया गया है, जहाँ 1,260 दिनों के अन्त में, अन्त के समय पर एक भविष्यवाणी की मुहर खोली जाती है। पीढ़ियों से छिपी हुई वह भविष्यवाणी की मुहर खोली जाती है, और वही भविष्यवाणी वह सत्य है, जो जब खोली जाती है, तो वह “महिमा” है जो रविवार के विधान के समय अन्यजातियों को प्रकट की जाती है। वह भेद मसीह तुम में, महिमा की आशा है, जो सातवीं तुरही के बजने के दिनों में सम्पन्न होता है।

परन्तु सातवें स्वर्गदूत की आवाज़ के दिनों में, जब वह तुरही फूँकना आरंभ करेगा, तब परमेश्वर का भेद पूरा हो जाएगा, जैसा कि उसने अपने दास भविष्यद्वक्ताओं को घोषित किया था। प्रकाशितवाक्य 10:7.

जैसा कि प्रकाशितवाक्य 10:7 में निरूपित है, यह सर्वथा उचित है कि सातवें महीने के दसवें दिन सातवें स्वर्गदूत का स्वर गूँजना आरम्भ हुआ। सातवाँ स्वर्गदूत तीसरे 'हाय' के रूप में भी निरूपित है, और पहले दो 'हाय' इस्लाम थे; इस प्रकार यह इस तथ्य के लिए दो गवाह प्रदान करता है कि तीसरा 'हाय' इस्लाम है। जब इस्लाम का नरसिंगा बज रहा होता है, तब परमेश्वर का भेद पूरा होता है।

सातवीं तुरही के इतिहास में, अवतार का सिद्धान्त—जो "मसीह तुम में" का भेद है, अथवा दिव्यता और मानवता का संयोजन, जैसा कि मसीह ने अपने ऊपर मानवीय देह धारण करके प्रकट किया—के सन्दर्भ में, एक लाख चवालीस हजार में गिने जाने के अभ्यर्थियों की यह परख होगी कि क्या परम-पवित्रस्थान में प्रवेश करने के लिए उनके पास आवश्यक तेल और विश्वास है। यदि वे हिचकिचाएँ, तो उन पर अंधकार छा जाता है; यदि वे मेम्ने का, जहाँ-जहाँ वह जाता है, अनुसरण करें, तो उनका मार्गदर्शन किया जाएगा कि वे वाचा के सन्दूक में दृष्टि डालें। सन्दूक में उन्हें सातवें दिन के सब्त का सिद्धान्त और अवतार का सिद्धान्त मिलेगा।

जितने महत्त्वपूर्ण भी ये दोनों सिद्धान्त हैं, मेरा ध्यान "अल्फा और ओमेगा की ज्योतियों" पर नहीं, बल्कि इस बात पर है कि भविष्यद्वक्त्री ने परमेश्वर की प्रजा को स्वर्गीय पवित्रस्थान में प्रवेश करते हुए और वाचा के सन्दूक के भीतर दृष्टि डालते हुए दर्शाया। अन्तिम दिनों में, एक लाख चवालीस हजार के इतिहास में निश्चय ही एक ऐसा बिन्दु होना चाहिए, जहाँ एक लाख चवालीस हजार को वाचा के खुले हुए सन्दूक को निहारने के लिए अति-पवित्र स्थान में ले जाया जाता है।

यदि आपके पास यह विश्वास है कि भविष्यद्वक्ता अन्तिम दिनों में परमेश्वर की प्रजा का निरूपण करते हैं, और साथ ही यह विश्वास भी कि बहन व्हाइट बाइबल के अन्य सभी भविष्यद्वक्ताओं के समान ही, हर दृष्टि से, दैवीय प्रेरणा-प्राप्त थीं—तो मैंने अभी जो अनुप्रयोग प्रस्तुत किया है, उसे सत्य मानकर स्वीकार करना होगा। एक लाख चवालीस हजार के लिए यह आवश्यक है कि वे विश्वास के द्वारा मसीह का अनुसरण करते हुए अति-पवित्र स्थान में प्रवेश करें, जैसा कि बहन व्हाइट कहती हैं कि विश्वासयोग्यों ने 22 अक्टूबर, 1844 को किया था। तब दो वर्ग प्रकट हुए: एक, वे जिन्होंने विश्वास के द्वारा प्रवेश करने से इन्कार किया; और दूसरे, वे जिन्होंने विश्वास के द्वारा प्रवेश किया।

मेरा ध्यान मसीह के प्रथम आगमन की घोषणा की ओर फिर से दिलाया गया। यूहन्ना को एलिय्याह की आत्मा और सामर्थ में यीशु का मार्ग तैयार करने के लिए भेजा गया था। यूहन्ना की गवाही को अस्वीकार करने वालों को यीशु की शिक्षाओं से कोई लाभ नहीं हुआ। उसके आने की भविष्यसूचना देने वाले संदेश के प्रति उनके विरोध ने उन्हें ऐसी स्थिति में ला दिया जहाँ वे यह कि वह मसीहा है, इस बात के सबसे सशक्त प्रमाणों को भी आसानी से ग्रहण नहीं कर सके। शैतान ने यूहन्ना के संदेश को अस्वीकार करने वालों को और आगे बढ़ाया कि वे मसीह को भी अस्वीकार करें और उसे क्रूस पर चढ़ाएँ। ऐसा करके उन्होंने अपने आप को ऐसी दशा में डाल लिया जहाँ वे पिन्तेकुस्त के दिन मिलने वाली उस आशीष को प्राप्त न कर सके, जो उन्हें स्वर्गीय पवित्रस्थान में प्रवेश का मार्ग सिखाती। मन्दिर का परदा फट जाना यह दिखाता था कि यहूदी बलिदान और नियम-विधियाँ अब स्वीकार नहीं किए जाएँगे। महान बलिदान चढ़ाया जा चुका था और स्वीकार भी कर लिया गया था, और पवित्र आत्मा, जो पिन्तेकुस्त के दिन उतरा, शिष्यों के मनो को पृथ्वीस्थ पवित्रस्थान से स्वर्गीय पवित्रस्थान की ओर ले गया, जहाँ यीशु अपने ही लहू के द्वारा प्रवेश कर चुका था, ताकि अपने शिष्यों पर अपने प्रायश्चित्त के लाभ उंडेल दे। परन्तु यहूदी पूर्ण अंधकार में छोड़ दिए गए। उद्धार की योजना के विषय में जो प्रकाश उन्हें मिल सकता था, वह सब उन्होंने खो दिया, और फिर भी वे अपने निरर्थक बलिदानों और भेंटों पर भरोसा करते रहे। स्वर्गीय पवित्रस्थान ने पृथ्वीस्थ की जगह ले ली थी, फिर भी उन्हें इस परिवर्तन का ज्ञान न था। अतः वे पवित्र स्थान में मसीह की मध्यस्थता से लाभान्वित नहीं हो सके।

बहुत से लोग इस भय के साथ यहूदियों के मार्ग को देखते हैं कि उन्होंने मसीह को अस्वीकार किया और क्रूस पर चढ़ाया; और जब वे उसके लज्जाजनक दुर्व्यवहार का इतिहास पढ़ते हैं, तो वे सोचते हैं कि वे उससे प्रेम करते हैं, और न तो पतरस की तरह उसे नकारते और न ही यहूदियों की तरह उसे क्रूस पर चढ़ाते। परन्तु परमेश्वर, जो

सबके हृदयों को पढ़ता है, ने उस प्रेम की परीक्षा ली जो वे यीशु के प्रति अनुभव करने का दावा करते थे। समस्त स्वर्ग ने पहले स्वर्गदूत के संदेश के स्वीकार किए जाने को अत्यन्त गहन रुचि से देखा। परन्तु बहुतों ने, जो यीशु से प्रेम करने का दावा करते थे और जो क्रूस की कहानी पढ़ते समय आँसू बहाते थे, उसके आगमन के शुभ समाचार का उपहास किया। संदेश को आनन्द के साथ ग्रहण करने के बजाय उन्होंने उसे भ्रम घोषित किया। उन्होंने उन लोगों से घृणा की जो उसके प्रगटन से प्रेम करते थे और उन्हें कलीसियाओं से बाहर कर दिया। जिन्होंने पहले संदेश को अस्वीकार किया, वे दूसरे से लाभान्वित नहीं हो सके; और न ही वे आधी रात की पुकार से लाभान्वित हुए, जो उन्हें विश्वास के द्वारा यीशु के साथ स्वर्गीय पवित्रस्थान के अत्यन्त पवित्र स्थान में प्रवेश करने के लिए तैयार करने वाली थी। और पहले दो संदेशों को अस्वीकार करके उन्होंने अपनी समझ को इतना अन्धकारमय कर दिया है कि वे तीसरे स्वर्गदूत के संदेश में कोई प्रकाश नहीं देख सकते, जो अत्यन्त पवित्र स्थान में जाने का मार्ग दिखाता है। मैंने देखा कि जैसे यहूदियों ने यीशु को क्रूस पर चढ़ाया, वैसे ही नामधारी कलीसियाओं ने इन संदेशों को क्रूस पर चढ़ा दिया है; इसलिए उन्हें अत्यन्त पवित्र स्थान में जाने के मार्ग का कोई ज्ञान नहीं है, और वे वहाँ यीशु की मध्यस्थता से लाभान्वित नहीं हो सकते। यहूदियों के समान, जो अपने निष्फल बलिदान चढ़ाते थे, वे उस कक्ष की ओर अपनी निष्फल प्रार्थनाएँ चढ़ाते हैं जिसे यीशु छोड़ चुका है; और शैतान, इस धोखे से प्रसन्न होकर, धार्मिक रूप धारण करता है, और इन कथित मसीहियों के मनो को अपनी ओर ले जाता है, अपनी शक्ति, अपने चिन्हों और झूठे चमत्कारों के साथ काम करते हुए, ताकि उन्हें अपने फन्दे में जकड़ दे। प्रारम्भिक लेखन, 259-261.

बहन वाइट योहन बपतिस्मा देनेवाले और मसीह—इन दोनों के इतिहास में निहित उस प्रगतिशील परीक्षात्मक प्रक्रिया की पहचान करती हैं, जो यहूदियों के पूर्णतः अंधकार में पड़ जाने पर समाप्त हुई थी, ताकि उसी इतिहास को वह मिलेराइटों के युग में निरूपित कर सकें; जो अन्तिम दिनों की प्राचीन भविष्यद्वक्त्री बहन वाइट का अल्फा इतिहास है। आरम्भ में जीवन-मृत्यु की परीक्षा इसी विषय पर थी कि परम-पवित्र स्थान में प्रवेश किया जाए या ऐसा करने से इन्कार किया जाए। ऐसा करने से इन्कार करने पर मिलेराइट इतिहास के विद्रोहियों पर वही अंधकार छा गया जो मसीह के इतिहास में विद्रोही यहूदियों पर आया था।

यीशु सदा किसी बात के अंत को उसकी शुरुआत के द्वारा दर्शाते हैं; अतः जब बहन वाइट को परम-पवित्र स्थान में ले जाया गया और उन्होंने वहाँ खुले वाचा के सन्दूक को निहारा, 22 अक्टूबर, 1844 की परीक्षा के संबंध में, तो यह दर्शाता है कि एक लाख चवालीस हजार की परीक्षा इस पर होगी कि वे मेम्ने का अनुसरण करते हुए परम-पवित्र स्थान में प्रवेश करते हैं, या पूर्ण शाश्वत अंधकार में चले जाते हैं। यह तथ्य उस विश्वास पर आधारित है कि जब प्राचीन भविष्यद्वक्ता स्वयं लिपिबद्ध साक्ष्य का अंग बनते हैं, तो वे परमेश्वर की उत्तरकालीन प्रजा का निरूपण करते हैं। बहन वाइट दोनों वर्गों का निरूपण करती हैं।

इस निराशा की अवस्था में मुझे एक स्वप्न आया, जिसने मेरे मन पर गहरी छाप छोड़ दी। मैंने एक मंदिर देखा, जिसकी ओर बहुत-से लोग उमड़ते आ रहे थे। जब समय का अंत होगा, तो केवल वे ही बचाए जाएँगे जो उस मंदिर में शरण लेते हैं। जो बाहर रह गए, वे सदा के लिए खो जाएँगे। बाहर की भीड़, जो अपनी-अपनी राह में लगी थी, मंदिर में प्रवेश करने वालों का उपहास करती और ठट्ठा उड़ाती, और उन्हें कहती कि सुरक्षा की यह योजना एक चालाक छल है—वास्तव में बचने जैसा कोई खतरा है ही नहीं। वे तो कुछ लोगों को पकड़ भी लेते थे ताकि उन्हें दीवारों के भीतर हड़बड़ी में प्रवेश करने से रोक दें।

उपहास का पात्र बनने के भय से, मुझे यही उचित लगा कि भीड़ के छँट जाने तक प्रतीक्षा करूँ, या जब तक मैं उनकी नज़र से बचकर भीतर प्रवेश कर सकूँ। पर घटने के बजाय लोगों की संख्या बढ़ती ही गई, और देर हो जाने के डर से, मैं जल्दबाज़ी में घर से निकल पड़ा और भीड़ को चीरते हुए आगे बढ़ा। मंदिर तक पहुँचने की व्यग्रता में मैंने अपने चारों ओर उमड़ी भीड़ पर न ध्यान दिया, न परवाह की। भवन में प्रवेश करते ही मैंने देखा कि विशाल मंदिर एक ही विशाल स्तंभ पर टिका हुआ था, और उसी से एक मेमना बाँधा गया था, जो पूरी तरह क्षत-विक्षत और लहलुहान था। वहाँ उपस्थित हम सबको ऐसा प्रतीत होता था कि यह मेमना हमारे कारण ही फाड़ा और कुचला गया था। जो भी मंदिर में प्रवेश करता, उसे उस मेमने के सामने आकर अपने पाप स्वीकार

करने होते।

मेमने के ठीक सामने कुछ ऊँचे आसन थे, जिन पर एक बहुत प्रसन्न दिखने वाला समूह बैठा था। उनके चेहरों पर स्वर्ग का प्रकाश चमकता हुआ लगता था, और वे परमेश्वर की स्तुति करते हुए आनंदमय कृतज्ञता के गीत गाते थे, जो स्वर्गदूतों के संगीत जैसे प्रतीत होते थे। ये वही लोग थे जो मेमने के सामने आए, अपने पापों को स्वीकार किया, क्षमा प्राप्त की, और अब किसी आनंदमय घटना की प्रसन्न आशा में प्रतीक्षा कर रहे थे।

भवन में प्रवेश कर लेने के बाद भी, मुझे पर भय छा गया और ऐसी लज्जा का बोध हुआ कि मुझे इन लोगों के सामने अपने आप को दीन करना पड़ेगा। परन्तु मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि मैं आगे बढ़ने को विवश हूँ, और मेमने का सामना करने के लिए स्तम्भ का चक्कर काटते हुए मैं धीरे-धीरे बढ़ रहा था, तभी तुरही बजी, मंदिर काँप उठा, एकत्रित पवित्रजनों की जयध्वनियाँ उठीं, एक भयावह दीप्ति ने भवन को आलोकित कर दिया, और तत्पश्चात सर्वत्र घोर अन्धकार छा गया। वे आनन्दित लोग उस दीप्ति के साथ सब के सब विलीन हो गए, और मैं रात के मौन आतंक में अकेला रह गया। मैं मनःक्लेश में जाग उठा और अपने आप को यह समझा पाना कठिन था कि यह सब स्वप्न था। मुझे प्रतीत हुआ कि मेरा विनाश निश्चित हो चुका है, कि प्रभु का आत्मा मुझे छोड़कर चला गया है, जो कभी लौटेगा नहीं।

इसके थोड़े ही समय बाद मुझे एक और स्वप्न आया। मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि मैं घोर निराशा में, मुख दोनों हाथों में छिपाए, इस प्रकार विचार कर रहा था: यदि यीशु पृथ्वी पर होते, तो मैं उनके पास जाता, उनके चरणों में गिर पड़ता, और अपने समस्त दुःख-कष्ट उन्हें कह सुनाता। वे मुझे से मुँह न मोड़ते, वे मुझ पर दया करते, और मैं सदा उनसे प्रेम करता और उनकी सेवा करता। इतने में द्वार खुला, और मनोहर काया तथा सुंदर मुखमंडल वाला एक व्यक्ति भीतर प्रविष्ट हुआ। उसने मुझ पर करुणाभरी दृष्टि डालकर कहा: 'क्या तुम यीशु को देखना चाहते हो? वे यहीं हैं, और यदि तुम चाहो तो उन्हें देख सकते हो। जो कुछ तुम्हारे पास है, उसे साथ लेकर मेरे पीछे आओ।'

मैंने यह बात अवर्णनीय आनन्द से सुनी, और प्रसन्नतापूर्वक अपनी सारी छोटी-छोटी संपत्तियाँ, प्रत्येक प्रिय स्मृति-चिह्न, समेटकर अपने मार्गदर्शक का अनुसरण किया। वह मुझे एक खड़ी और प्रतीततः नाजुक सी सीढ़ी तक ले गया। जैसे ही मैंने सीढ़ियाँ चढ़ना आरम्भ किया, उसने मुझे चेताया कि मैं अपनी दृष्टि ऊपर ही स्थिर रखूँ, कहीं ऐसा न हो कि मुझे चक्कर आ जाए और मैं गिर पड़ूँ। अनेकों अन्य, जो उस खड़ी चढ़ाई पर चढ़ रहे थे, शिखर तक पहुँचने से पहले ही गिर पड़े।

अंततः हम अंतिम सीढ़ी पर पहुँचे और एक द्वार के सामने खड़े हो गए। यहाँ मेरे मार्गदर्शक ने मुझे यह निर्देश दिया कि जो कुछ मैं अपने साथ लाया था, उसे सब यहीं छोड़ दूँ। मैंने प्रसन्नतापूर्वक उन्हें नीचे रख दिया; तब उसने द्वार खोला और मुझे भीतर प्रवेश करने को कहा। क्षण भर में मैं यीशु के सम्मुख खड़ा था। उस सुंदर मुखमंडल के विषय में भ्रम की कोई संभावना न थी। औदार्य और महिमा की वह अभिव्यक्ति किसी और की हो ही नहीं सकती थी। जैसे ही उनकी दृष्टि मुझ पर ठहरी, मुझे तत्क्षण ज्ञात हो गया कि वे मेरे जीवन की प्रत्येक परिस्थिति से, तथा मेरे समस्त अंतरंग विचारों और भावनाओं से, भली-भाँति परिचित हैं।

मैंने उनकी दृष्टि से अपने को बचाने का प्रयत्न किया; मुझे लगा कि उनके अन्वेषी नेत्रों का सामना करना मेरे लिए असह्य है। परन्तु वे मुस्कान के साथ समीप आए, और अपना हाथ मेरे मस्तक पर रखकर बोले, 'भय न कर।' उनकी मधुर वाणी के स्वर ने मेरे हृदय को ऐसे आनन्द से रोमांचित कर दिया, जैसा उसने पहले कभी अनुभव न किया था। मैं इतनी आनन्दित था कि एक शब्द भी न बोल सका; परन्तु भावावेश से अभिभूत होकर उनके चरणों में दण्डवत् गिर पड़ा। जब मैं वहाँ निरुपाय पड़ा था, तब सौन्दर्य और महिमा के दृश्य मेरे सम्मुख से होकर गुजरे, और मुझे प्रतीत हुआ कि मैं स्वर्ग की सुरक्षा और शान्ति तक पहुँच गया हूँ। अन्ततः मेरी शक्ति लौट आई, और मैं उठ खड़ा हुआ। यीशु के प्रेममय नेत्र अब भी मुझ पर टिके थे, और उनकी मुस्कान ने मेरी आत्मा को आनन्द से भर दिया। उनकी उपस्थिति ने मुझे पवित्र श्रद्धा और अकथनीय प्रेम से परिपूर्ण कर दिया।

अब मेरे मार्गदर्शक ने द्वार खोला, और हम दोनों बाहर निकल गए। उसने मुझे आज्ञा दी कि मैं वे समस्त वस्तुएँ फिर से उठा लूँ, जिन्हें मैं बाहर छोड़ आया था। यह कर लेने पर, उसने मुझे कसकर लपेटी हुई एक हरी रज्जु थमा

दी। उसने निर्देश दिया कि मैं इसे अपने हृदय के समीप रखूँ, और जब मैं यीशु को देखना चाहूँ, तो इसे अपने वक्ष से निकालकर यथासंभव तान दूँ। उसने मुझे सावधान किया कि इसे अधिक समय तक लिपटा हुआ न रहने दूँ, कहीं ऐसा न हो कि इसमें गाँठें पड़ जाएँ और इसे सीधा करना कठिन हो जाए। मैंने उस रज्जु को अपने हृदय के निकट रख लिया और प्रभु की स्तुति करता हुआ, तथा जिन-जिन से भेंट हुई उन्हें यह बताते हुए कि वे यीशु को कहाँ पा सकते हैं, आनंदपूर्वक संकरी सीढ़ियों से नीचे उतरा। इस स्वप्न ने मुझे आशा प्रदान की। मेरे मन में वह हरी रज्जु विश्वास का प्रतीक थी, और परमेश्वर पर भरोसा करने का सौंदर्य और सरलता मेरी आत्मा पर उदय होने लगी। टेस्टिमोनीज़, खंड 1, 27-29.

17 अगस्त को एक्सेटर कैम्प मीटिंग के समापन से लेकर 22 अक्टूबर, 1844 तक का अंतराल छियासठ दिनों का था। वे छियासठ दिन मध्यरात्रि की पुकार के प्रचार की अवधि का प्रतिनिधित्व करते हैं, और दस कुँवारियों के दृष्टान्त के संदर्भ में, तब जिन्होंने उस संदेश का प्रचार किया, वे तेल रखने वालों का प्रतिनिधित्व करते हैं, और जिन्होंने तब उस संदेश का प्रचार नहीं किया, उनके पास तेल नहीं था।

दृष्टान्त में विवाह विलंब-काल के आरम्भ में सम्पन्न हुआ। वैधानिक विवाह सम्पन्न हुआ, और तब सब लोग घर लौट गए तथा प्रतीक्षा करते रहे, जब तक वर-पिता यह निर्णय न कर लें कि विवाह का परिपूर्णन करना स्वीकार्य है या नहीं। प्रथम विवाह और मध्यरात्रि में होने वाले द्वितीय समारोह के बीच की गई बेवफाई को व्यभिचार माना जाता था। विलंब-काल का आधार यह था कि वर-पिता कुछ समय तक प्रतीक्षा करता था, ताकि वह देख सके कि उस अवधि में वधू के साथ क्या घटित होता है। क्या वह गर्भवती थी?

जब पिता ने ठहराया कि सब कुछ ठीक है, तो मध्यरात्रि की विवाह-यात्रा आरम्भ हुई, और यह रात में इसलिए आरम्भ होती थी कि फिलिस्तीन के दिन की झुलसा देने वाली गरमी से बचा जा सके। इसी कारण वधू की सहचरियाँ—अर्थात् दृष्टान्त की कुँवारी कन्याएँ—से अपेक्षा थी कि वे अपने-अपने दीपक और तेल का भंडार साथ रखें, उस मध्यरात्रि की पुकार की प्रतीक्षा में जो यह उद्धोष करती थी कि विवाह-यात्रा आरम्भ हो चुकी है, क्योंकि वह रात में ही सम्पन्न होने वाली थी। एक्सेटर में वह मध्यरात्रि की पुकार आ पहुँची, और या तो आपके पास विवाह-यात्रा के लिए पर्याप्त तेल तैयार था, या नहीं था।

जब वे संदेश लेकर एक्सेटर से निकले, तब वे उस मुहरबंद प्रजा का चित्रण कर रहे थे। कुछ के पास 22 अक्टूबर, 1844 को विवाह में प्रवेश करने के लिए पर्याप्त तेल था, और कुछ के पास नहीं था। वे छियासठ दिन उस काल का प्रतीक हैं जब रविवार के कानून का द्वार बंद होने तक परमेश्वर की प्रजा पर मुहर लगती है। यदि उनके पास उचित मात्रा में तेल था, तो वे विश्वास के द्वारा परम पवित्र स्थान में प्रविष्ट हुए। बहन व्हाइट ने अंतिम दिनों में परमेश्वर की प्रजा के परम पवित्र स्थान में प्रवेश करने का चित्रण किया; और उनके अल्फ़ा इतिहास में विश्वास के द्वारा परम पवित्र स्थान में प्रवेश करना जीवन-मरण की परीक्षा था। अंतिम दिनों में एक लाख चवालीस हज़ार की यह परीक्षा ली जाएगी कि क्या वे विश्वास से परम पवित्र स्थान में प्रवेश करेंगे। यह फिर से जीवन-मरण की परीक्षा है।

हम इन बातों को अगले लेख में जारी रखेंगे।

मन्दिर के शुद्धीकरण में, यीशु मसीहा के रूप में अपने दायित्व की घोषणा कर रहे थे, और अपने कार्य में प्रविष्ट हो रहे थे। वह मन्दिर, जो दैवीय उपस्थिति के निवास के लिए निर्मित किया गया था, इस्राएल और संसार के लिए एक प्रत्यक्ष शिक्षापाठ ठहराया गया था। अनादि काल से परमेश्वर की यह योजना रही कि प्रत्येक सृजित प्राणी—उज्ज्वल और पवित्र सेराफ से लेकर मनुष्य तक—सृष्टिकर्ता के निवास के लिए एक मन्दिर हो। पाप के कारण मनुष्यजाति परमेश्वर का मन्दिर न रही। बुराई से अंधकारमय और मलिन होकर, मनुष्य का हृदय अब परमेश्वर की महिमा प्रकट न करता था। परन्तु परमेश्वर के पुत्र के देहधारण द्वारा स्वर्ग का उद्देश्य परिपूर्ण होता है। परमेश्वर मनुष्यता में निवास करता है, और उद्धारकारी अनुग्रह के द्वारा मनुष्य का हृदय फिर से उसका मन्दिर बन जाता है। परमेश्वर की योजना थी कि यरूशलेम का मन्दिर प्रत्येक आत्मा के लिए उपलब्ध उच्च नियति का सतत साक्षी बना रहे। परन्तु यहूदी उस भवन के महत्त्व को समझ न सके, जिस पर वे इतना गर्व करते थे। उन्होंने अपने

को दैवी आत्मा के लिए पवित्र मन्दिरों के रूप में समर्पित नहीं किया। यरूशलेम के मन्दिर के प्रांगण, अपवित्र वाणिज्य के कोलाहल से भरे हुए, अत्यन्त यथार्थ रूप से हृदय के उस मन्दिर का प्रतिनिधित्व करते थे जो इन्द्रिय-वासना और अपवित्र विचारों की उपस्थिति से मलिन था।

जब यीशु ने मंदिर को संसार के खरीदारों और विक्रेताओं से शुद्ध किया, तब उन्होंने यह घोषित किया कि उनका उद्देश्य हृदय को पाप की अशुद्धि से—सांसारिक इच्छाओं, स्वार्थी वासनाओं और बुरी आदतों से, जो आत्मा को भ्रष्ट करती हैं—शुद्ध करना है। मलाकी 3:1-3 उद्धृत। *The Desire of Ages*, 161.

“भविष्यद्वक्ता कहता है, ‘मैं ने एक और स्वर्गदूत को स्वर्ग से उतरते देखा, जिसके पास बड़ा अधिकार था; और पृथ्वी उसकी महिमा से प्रकाशित हो गई। और वह बड़े बल के साथ ऊँचे शब्द में पुकारकर कहने लगा, कि बड़ा बाबुल गिर गया, गिर गया, और दुष्टात्माओं का निवासस्थान बन गया है’ (Revelation 18:1, 2)। यही वही संदेश है जो दूसरे स्वर्गदूत द्वारा दिया गया था। बाबुल गिर गया है, ‘क्योंकि उसने सब जातियों को अपने व्यभिचार के प्रकोप की दाखमधु पिलाई है’ (Revelation 14:8)। वह दाखमधु क्या है?—उसके मिथ्या सिद्धांत। उसने चौथी आज्ञा के सब्त के स्थान पर संसार को एक झूठा विश्रामदिन दिया है, और उस असत्य को भी दोहराया है जो शैतान ने सबसे पहले अदन में हव्वा से कहा था—आत्मा की स्वाभाविक अमरता। इस प्रकार की अनेक संबंधित भ्रांतियाँ उसने दूर-दूर तक फैला दी हैं, ‘और मनुष्यों की आज्ञाओं को धर्मोपदेश करके सिखाती है’ (Matthew 15:9)।”

“जब यीशु ने अपनी सार्वजनिक सेवा आरम्भ की, तब उन्होंने मन्दिर को उसके अपवित्र अपमान से शुद्ध किया। उनकी सेवा के अंतिम कार्यों में मन्दिर का दूसरा शुद्धिकरण भी सम्मिलित था। इसी प्रकार, संसार को चेतावनी देने के अंतिम कार्य में कलीसियाओं के लिए दो पृथक् आह्वान किए जाते हैं। दूसरे स्वर्गदूत का सन्देश यह है, ‘गिर पड़ा, गिर पड़ा, बड़ा बाबुल, क्योंकि उसने अपने व्यभिचार के क्रोध की दाखमधु सब जातियों को पिलाई है’ (प्रकाशितवाक्य 14:8)। और तीसरे स्वर्गदूत के सन्देश के प्रबल पुकार में स्वर्ग से यह वाणी सुनाई देती है, ‘हे मेरी प्रजा, उसमें से निकल आओ, ताकि तुम उसके पापों में भागी न हो, और उसकी विपत्तियों में से कोई तुम पर न आ पड़े। क्योंकि उसके पाप स्वर्ग तक पहुँच गए हैं, और परमेश्वर ने उसके अधर्मों को स्मरण किया है’ (प्रकाशितवाक्य 18:4, 5)।” *Selected Messages*, book 2, 118.